था। अतएव पराशर आदि सब महर्षियों ने श्रीकृष्ण को स्वयं भगवान् माना है। अब श्रीकृष्ण स्वयं श्रीमुख से अर्जुन को अपने ऐश्वर्य और कार्य-कलाप के विशेष गोपनीय ज्ञान का उपदेश कर रहे हैं। सातवें, आठवें और नौवें अध्यायों में वे अपनी शक्तियों और उनके कार्यों का निरूपण कर चुके हैं; अब इस अध्याय में अर्जुन के लिए अपने विशिष्ट ऐश्वर्यों का वर्णन करते हैं। भक्ति को दृढ़ निष्ठा सहित स्थापित करने के लिए पिछले अध्याय में अपनी विविध शक्ति का विवेचन करने के बाद अब इस अध्याय में वे फिर अर्जुन को अपनी नाना विभूतियों और ऐश्वर्यों का वर्णन सुनाते हैं।

श्रीभगवान् की कथा का जितना अधिक श्रवण किया जाता है, उतनी ही भक्ति में निष्ठा बढ़ती है। अतएव भक्तों के संग में भगवत्-कथा को नित्य सुनना चाहिए: इससे भक्तियोग में अवश्य उन्नति होगी। कृष्णभावना की प्राप्ति के यथार्थ लोलुप ही भक्तगोष्ठी में भागवती-वार्ता का आस्वादन कर सकते हैं; दूसरों का इसमें प्रवेश नहीं हो सकता। श्रीभगवान् अर्जुन से स्पष्ट कहते हैं कि वह उनका प्रेमभाजन है, इसीलिए उसके कल्याण की भावना से वे गीतामृत का परिवेषण कर रहे हैं।

**न मे विदुः सुरगणाः प्रभवं न महर्षयः।**
**अहमादिर्हि देवानां महर्षीणां च सर्वशः।।२।।**

**न**=नहीं; **मे**=मेरे; **विदुः**=जानते; **सुरगणाः**=देवता; **प्रभवम्**=ऐश्वर्यमय आविर्भाव को; **न**=न; **महर्षयः**=महर्षि (ही जानते); **अहम्**=मैं; **आदिः**=आदि (हूँ); **हि**=क्योंकि; **देवानाम्**=देवताओं का; **महर्षीणाम्**=महर्षियों का; **च**=भी; **सर्वशः**=सब प्रकार से।

### अनुवाद

मेरे आविर्भाव को न तो देवता जानते हैं और न महर्षिजन ही जानते हैं, क्योंकि मैं सब प्रकार से देवताओं का और महर्षियों का भी आदिकारण हूँ।।२।।

### तात्पर्य

'ब्रह्मसंहिता' से प्रमाण है कि भगवान् श्रीकृष्ण परमेश्वर हैं; उनसे बड़ा कोई नहीं है, वे सब कारणों के परम कारण हैं। यहाँ श्रीभगवान् स्वयं कहते हैं कि वे सब देव-महर्षियों के आदिकारण हैं। अतएव ये देवता और महर्षि तक श्रीकृष्ण के तत्त्व को जान नहीं सकते। वे न तो उनके नाम के तत्त्व को समझ सकते हैं और न ही उनके स्वरूप को जानने में समर्थ हैं। फिर इस तुच्छ लोक के नाममात्र के विद्वानों के सम्बन्ध में कहना ही क्या? नररूप में पृथ्वी पर अवतरित होकर नरवत् परम अद्भुत कार्य करने में श्रीभगवान् का क्या प्रयोजन है, यह कोई नहीं समझ सकता। इससे यह जान लेना चाहिये कि श्रीकृष्ण के तत्त्वबोध के लिये विद्वत्ता की योग्यता नहीं चाहिए। मनोधर्मी से श्रीकृष्ण के तत्त्व को समझने के प्रयास में तो देवता और महर्षि भी विफल ही रहते हैं। श्रीमद्भागवत में स्पष्ट उक्ति है कि बड़े से बड़े देवता भी श्रीकृष्ण को तत्त्व से नहीं जान सकते। अपनी दोषमयी इन्द्रियों की सीमा तक मनोधर्म करके वे